अध्याय - 3

निराला की 'अपरा' में राष्ट्रीय चेताना

अध्याय - 3

निराला की 'अपरा' में राष्ट्रीय चेताना

हम राष्ट्र शब्द, परिभाषा और राष्ट्रीयता के स्वरूप का विवेचन पहले कर चुके हैं। परंतु इस राष्ट्रीय चेतना को निरालाजी के "अपरा" रचना के संदर्भ में देखना है। अपने समय की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय गतिविधियों से निरालाजी पूर्णतया परिचित ही नहीं वरन प्रभावित भी थे। इतना ही नहीं उसके निर्माण में निरालाजी का सक्रिय सहयोग भी रहा है। शौर्य, राष्ट्रप्रेम और अपराजेय के मार्दव तथा शृंगार के माधुर्य से आपकी रचनाएँ ओत-प्रोत हैं।

निरालाजी का कृतित्व राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत है। आपका व्यक्तित्व राष्ट्रीयता के ताने-बाने से गुंथा हुआ है। आपकी राष्ट्रीयता के पीछे आपका अध्यात्मिक चिंतन एवं विवेकानन्द की अध्यात्मिकता, रामकृष्ण मिशन की अद्वैतवादी भावना तथा गांधी और तिलक का विद्रोह खडा रहा है। डॉ॰रामविलास शर्माजी देश भक्ति के इस स्वरूप पर वेदान्दवादी दर्शन का प्रभाव मानते हैं। डॉ॰शर्माजी के अनुसार,, "निरालाजी में ज्ञान, भक्ति और कर्म-तीनों योगों के समन्वय का आधार है आपका देश प्रेम।"[1]

साहित्यिक जीवन में आरंभ से लेकर आखिरी दौर तक साहित्य के विभिन्न रूपों में और उसके विभिन्न स्तरों पर देश को सुखी,, स्वाधीन और समृध्द देखने की आकांक्षा आपको प्रेरित करती है। देशप्रेम निरालाजी के काव्य में अनेक भावों का स्त्रोत है। निरालाजी की स्पष्ट मान्यता है कि राष्ट्र के समविकास में विकास की आवश्यकता तो सभी की है किन्तु जो नितांत पददलित, शोषित एवं हीन हैं, सबसे पहले उन्हें उठाना होगा जिससे वे अन्य वर्गो के समान हो सके और सभी सर्वजन विकास की रूपरेखा संभव हो सकती है।

निरालाजी की विचारधारा और भाव-भूमि का विकास राष्ट्रीय भूमिका पर हुआ है। तत्कालीन सामाजिक और आर्थिक जीवन की विषमता, अतीत के उज्ज्वल वैभव की गरिमा और भविष्य की मनोहारिणी कल्पना ने आपकी राष्ट्रीय चेतना को गतिशील बनाया था। निरालाजी की राष्ट्रीयता राजनैतिक नेताओं की तरह नारेबाजी, दौड-धूप, तोडफोड में व्यक्त नहीं हुई है। आपकी राष्ट्रीयता धार्मिक, साम्प्रदायिक अथवा जातीय संकीर्णता से कोई संबंध नहीं रखती। निरालाजी की यही व्यापक साधना आपको एक ऐसा राष्ट्रकवि का परिवेश देती है जो राष्ट्र के भौतिक संकुचित घेरे को भंग कर सार्वभौम और विशुध्द मानवीय भूमि की साधना करता है।

निरालाजी की "अपरा" रचना में भी हमें राष्ट्रीय चेतना की कविताओं का अध्ययन करना है। निरालाजी में राष्ट्रीय चेतना का विकास आपके बचपन काल से ही निर्माण हो गया था। युवा अवस्था में भी निरालाजी ने भारत के स्वाधीनता के लिए अपने महत्वपूर्ण योगदान से भारतीय लोगों को प्रसन्न किया है। पूर्ववर्ती कविताओं में से कुछ सुन्दर काव्य रचनाओं का ही चयन किया गया हैं पर उसका निरालाजी के साहित्य में अपना विशिष्ठ महत्व है। निरालाजी के काव्यविकास के क्रमिक इतिहास के साथ-साथ आपके काव्य के विभिन्न प्रयोगों व प्रवृतियों का भी परिचय मिल जाता है।

"अपरा" में निरालाजी की लिखी हुई सन 50 तक की कवितओं को चुनकर उनका संकलन किया है। इन कविताओं में कवि का अपना व्यक्तित्व निखर आता है। इन कविताओं में निरालाजीने अध्यात्मिक कविता, राष्ट्रीय कविता, सांस्कृतिक कविता, प्रकृति पर कविता, राजनीतिपर किया व्यंग्य प्रस्तुत करने वाली कविता आदि के रूप में संकलित किया है। इनमें सब कविताओं का लेखन कविने पहले ही किया था। परंतु महादेवी वर्माजी के कहने पर निरालाजी ने "अपरा" का संकलन किया था। अतः इसका अलग महत्व रहा है।

निरालाजी की इस संकलित संग्रह "अपरा" में हमें राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन करना है। हमें देखना है कि कविने किस रूप से राष्ट्रीय चेतना चित्रित

की है। हम राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों का आधार लेकर अध्ययन करने जा रहे हैं। ये महत्वपूर्ण बातें इस प्रकार है -

1. भारत की महिमा का वर्णन।
2. अतीत का गौरवगान।
3. वर्तमान देश की दुर्दशा।
4. देश की तत्कालीन आर्थिक दुर्दशा।
5. नारी चित्रण।
6. तत्कालीन सामाजिक वर्णन।
7. शोषित वर्ग की दुरावस्था का वर्णन।
8. क्रांति की प्रेरणा।
9. सुखी समाज का चित्र तैयार करना।

3.1 भारत की महिमा का वर्णन :-

निरालाजी के मन में बचपन से ही भारत माता का चित्र तैयार हो गया था। आपके काव्य में भारत माता की महिमा गाई है। भारत माता की महिमा की देन आपको स्वामी विवेकानन्दजी से प्राप्त हुई थी। निरालाजी के जीवन में भारत माता का महत्वपूर्ण स्थान है। निरालाजी ने भारत माता की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है, "भारत माता की जय हो, विजय हो, भारत माता ने स्वर्ण रूपी पीले धन को अपने कोमल हाथों में ले लिया है। भारत माता के चरणोंतले लंका अर्पित है। सागर की लहरें गरजकर अपने पानी से भारत माता के दोनों चरणों को धोता है।"[2] इसमें कविने भारत माता का वर्णन अपने भूमि के रूप में किया है। कविने इसमें जल, स्वर्ण, वस्त्र आदि शब्दों का प्रयोग कर भारत माता की गरिमा गायी है।

आगे कवि भारत माता की महिमा प्रकृति के माध्यम से चित्रित करता है। भारत माता का वर्णन प्रकृति के माध्यम से इस प्रकार किया जाता है, "हे भारत माता तुम्हारी शरीर पर जो वृक्ष, घास और वन की लताएँ है ये तुम्हारे

वस्त्र है और ये तुम्हारे आँचल में सुमन जैसे दिखाई देते हैं और साथ ही तुमने गले में जलकणों का श्वेत हार धारण किया है।"[3]

कवि को भारत माता का वर्णन सरस्वती के रूप जैसा सुंदर दिखता है। माता सरस्वती जिस प्रकार सुंदर वस्त्र पहनकर हाथ में वीणा लेकर और गले में शुभ्र मोतियों का हार पहना हो। इस प्रकार कवि ने भारत माता का वर्णन प्रकृति के माध्यम से किया हैं। आगे भी कवि भारत माता का वर्णन करते हैं, भारत माता के मस्तक पर बर्फ से मंडित हिमालय रूपी मुकुट हैं और जिस प्रकार प्राण प्रणव ओंकार के समान लोग शत-शत मुखों से विशाल दिशाओं में परमात्मा का जप करते हैं उसी तरह भारत माता का भी जप होता है।[4] जिस प्रकार सरस्वती माता ने अपने सीर के ऊपर शुभ्र मुकुट रखा है, उसी तरह भारत माता के सीर पर भी हिमालय जैसा पर्वत मुकुट की तरह है।

निरालाजी अपनी भारत माता के स्वाधीनता के लिए अपने मन के भावों को कविता में रखते थे। निरालाजी की "मातृ-वन्दना" कविता में आपके मातृप्रेम और साहस का वर्णन मिलता है। कवि मातृभूमि के लिए बली भी चढने के लिए तैयार होते हैं। पीसने से लथपथ शरीर की बली चढाकर भारत माता को स्वाधीनता देना चाहते हैं।[5] कवि भारत माता के चरणों में ही रहने का वरदान मांगते हैं।

कवि भारत की महिमा प्राचीन काल में भी देखता है। आपने शिवाजी के काल में भी मातृ-भूमि की महिमा को देखा था। कवि भारत माता के लिए बलिदान देने का संदेश देते हुए कहते हैं कि जो वीर युध्द में मर जाता है वह भी भारत माता को स्वाधीन करता है। उसके मरने से ही दूसरे वीर मातृभूमि की रक्षा करेंगे। हे राजा जयसिंह यदि तुम भारत माँ का एक भी दाग शत्रू के खुनसे अगर धो डालोगे तो तुम देश वासियों का कितना प्रेम पाओंगे और अमर कहलाओंगे। यह महत्वपूर्ण बात हैं।[6]

इस प्रकार निरालाजी ने अपनी मातृभूमी का महिमा वर्णन किया है। जो संसार में महत्वपूर्ण भूमि मानी जाती है वह भारत माता। भारत माता के

प्रति प्रत्येक भारत वासी के दिल में प्रेम की भावना निर्माण होती है और निरालाजी जैसे अनेक कवियों ने भारत माता का गौरवगान किया है जो भारतीय लोगों के भावविश्व को समृध्द कर देता है। इसप्रकार निरालाजी की भारत महिमा वर्णन से हमार मन में भारत माँ के प्रति आदर की भावना निर्माण होती है।

3·2 अतीत का गौरव गान :-

भारत का अतीत गौरव मंडित, समृध्दि वैभव से युक्त एवं संपन्न रहा है। भारत की संस्कृति तथा सभ्यता भी बडी प्राचीन है। आधुनिक युग के काव्य में राष्ट्रीय चेतना और अतीत गौरवगाथा की जो प्रवृत्ति परिलक्षित होती है उसके मूल में अंग्रेजी का प्रभाव विद्यमान है। अतीत का वैभव दासता की शृंखलाओं को तोडने की प्रेरणा देता है। राष्ट्र के प्रति प्रेम राष्ट्रीय चेतना का मूल आधार है। राष्ट्रीय चेतना अतीत के सहारे ही गौरवमय भविष्य के निर्माण की आशा है। अतीत की भव्यता कवियों के हृदय में आशा का संचार करती है और उन्हें देश के आशापूर्ण भविष्य का विश्वास दिलाती है। डॉ·शंभुनाथ पाण्डेयजी ने भी अतीत के गौरव गान के बारे में कहा है कि,, "अतीत गौरव के स्मरण का एक और कारण यह है कि अंग्रेज कूटनीतिज्ञ भारतीय राष्ट्रीयता का विनाश करके और जनता को आत्म-विस्मृत करके उसे अपनी सभ्यता संस्कृति के रंग में रखना चाहते थे। वे भारतीय जनता में आत्म-हीनता की भावना दृढ करके उसे दीर्घकाल के लिए दासत्व की शृंखला में जकडे रखना चाहते थे।"[7]

निरालाजी के काव्य में अतीत का ओज सशक्त स्वर में बोलता है। निरालाजी की कविता में अतीत का अनुराग इतना प्रबल है कि पग-पगपर पीछे मुडकर राष्ट्र के अतीत को देखता है। निरालाजी ने भी अपने काव्य में अतीत का गौरव गान किया है। "राम की शक्तिपूजा", "छत्रपति शिवाजी का पत्र", "यमुना के प्रति", "खण्डहर के प्रति", "सहस्त्राब्दि" कविताओं में निरालाजी ने अतीत का गौरव गान किया है।

निरालाजी ने "राम की शक्ति पूजा" में राम के मन में होने वाले सीता के प्रेम का वर्णन है। परंतु राम रावण से युध्द करने के लिए तत्पर रहते हैं। उन्हें रावण जैसा महादानव का नाश करना था जो खुद ब्रहम का रूप लेकर राम में समाहित हो गये थे। राम ने ही स्त्री जाती के मान अपमान का बदला लेने के लिए ही रावण से युध्द किया हैं और युध्द में विजय प्राप्त की है किंतु यह राम की विजय न होकर ऐसा मानना होगा कि यह पूरे भारत वर्ष की स्त्रियों की विजय है।

शिवाजी महाराज का चरित्र देशभक्तों के लिए सर्वदा अनुकरणीय रहा हैं। उन्होंने अनेक बिभीषिकाओं में भी अपने देश की रक्षा के लिए हिम्मत नहीं हारी थी। "छत्रपति शिवाजी का पत्र" निरालाजी की एक श्रेष्ठ कविता है। यह कविता एक पत्र के रूप में जो शिवाजी द्वारा जयसिंह को भेजा गया है। इस कविता में शिवाजी के अमीट शौर्य का परिचय मिलता है। वहाँ उनकी राष्ट्रीय भावनाओं द्वारा पथभ्रष्ठ देशवासियों के लिए देशभक्ति की प्रेरणा भी विद्यमान है। राजा जयसिंह की प्रशंसा, निन्दा, भर्त्सना आदि व्यंग्य कर शिवाजी महाराज उसे देश के हित,, हिंदुत्व की रक्षा और मर्यादा, क्षात्रिय धर्म के पालन आदि का उपदेश देते हैं। कवि वस्तुतः शिवाजी महाराज की ललकार के द्वारा भारत वासियों को अंग्रेजों के विरूध्द उठ खडे होने के लिए ललकारते हैं। कवि ने स्पष्ट कहा है, आज जितने लोग भौतिक सुख के बलपर चढे हैं वह बल चिरकाल तक नहीं रह सकता है, वह नष्ट होने वाली चीज है और वही ज्योति हमारे सामने हमेशा के लिए रहेगी जो हिन्दुस्तान को घोर अपमान से मुक्त करा के पराधीनतासे भी मुक्त करेगी और हम दासता से मुक्त होंगे।[8]

राष्ट्रीय भाव जागृत करनेवाली निरालाजी की "जागो फिर एक बार" कविता भी महत्वपूर्ण हैं। "जागो फिर एक बार" कविता में कवि भारत वासियों को उद्‌बोधित करता है, उनमें अदम्य शक्ति और अद्‌भूत आत्मविश्वास भरता हैं। सिखों के गुरू गोविन्दसिंह ने जीवनभर विदेशी आक्रांताओं का विरोध करते हुए

भारत के आन को सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया था। उन्होंने भारतीय जनता को उसकी अन्तर्निहित शक्ति से परिचित कराया था। उनकी मेघ-गर्जना को निनादित करते हुए महाकवि निरालाजी ने उनके अदम्य शौर्य का स्मरण कराया है, हे भारत वासियों सिन्धु नदी के किनारे पर बसने वाले आर्यों ने विशाल सागर के समान वीर गीत गाते-गाते वीर गति को प्राप्त हो गये। "सव्वा-सव्वा लाख शत्रुओं पर एक-एक सिन्ध आर्य की बली चढाकर अपना नाम गुरू गोविन्दसिह सार्थक करने की बात कही हैं।

प्राचीन भारत का वैभव "खण्डहर के प्रति" कविता में प्रतीत होता हैं। कविने खण्डहर को देखकर अपने अतीत का वर्णन किया है। भारत वर्ष में खण्डहर एक प्रतीक के रूप में आधुनिक पीढी को संबोधित कर रहा है। "जैमिनी, दर्शन शास्त्र के रचियता पंतजलि और महाभारत के रचियत वेदव्यास ऋषि, मर्यादा पुरूषोत्तम राम, कृष्ण, भीमार्जुन, भीष्म के सदृश्य महापुरूषों ने मेरी गोद में बचपन के अनेक खेलों को खेला हैं। और सबने बडे होकर तुम्हारा ही सम्मान किया है।"[10] "यमुना के प्रति" कविता में भी अतीत का गौरव गान किया हैं। प्राचीन काल से यमुना भारत वासियों का सुख-दुःख अपने साथ लेकर हमेशा बहती हैं। भारत का गौरव बनाने में वह हमेशा लोगों को प्रेरणा देती रही हैं।

"सहस्त्राब्दि" कविता में भारत के पुरातन गौरव का पूरा इतिहास समाहित कर दिया है। बुध्द, महावीर, शंकर, रामानुज आदि ने भारतीय जनता के जीवन को दर्शन की जिस श्री से विभूषित किया है, उसका परिचय प्राप्त कर कवि दार्शनिक रूप समझने में सुविधा होती हैं। सहस्त्राब्दि निरालाजी की ऐतिहासिक चेतना और राष्ट्रीय जागृति को व्यक्त करती है। विक्रम के 1000 संवत् तक भारतीय इतिहास और संस्कृति का ओजस्वी वर्णन हुआ है। शंकराचार्य का उत्थान, बौध्दधर्म का पतन और जन बल को बढाने के लिए वाम-पथ का प्रचलन हुआ। अदिव्य भावों के विरोध में कुमारि का बौध्द धर्म से हुआ। यह विरोध इतना प्रबल हुआ कि, कुमारिका के शिष्य में शंकराचार्य के भाव से शुध्द भावों का प्रभाव निर्माण कर कुमारिका ने दिग्विजय के लिए संपूर्ण भारत भर भ्रमण किया।[11]

इस प्रकार निरालाजी ने राष्ट्रीय उत्थान के लिए भारत के भव्य प्राचीन इतिहास की झाँकी दिखाकर वर्तमान को प्रेरणा दी है। निरालाजी ने शूरवीरों के तेजस्वी रूप को चित्रित करके, राष्ट्र की सुप्त प्राय चेतना को जगाने का सराहनीय प्रयास किया।

3·3 देश की दुर्दशा :-

किसी राष्ट्र की प्रशासन संबंधी गतिविधयों का संचालन जब विदेशियों के हाथ में चला जाता है। तब राष्ट्रीय स्तर पर अनेक बुराईयाँ जन्म लेती हैं और धीरे-धीरे जन-जीवन पतनकी ओर बढता जाता है। पारतंत्र भारत की भी यही दशा हुई। दासता के बंधन में बंधे देशवासियों की राष्ट्रीय चेतना शिथिल होती गयी। अनेक प्रकार के दुर्व्यसनों में लीन जनता में आलस्य और प्रमाद का जन्म हुआ जिसके कारण सर्वत्र सर्वनाश के ही दर्शन होने लगे। निरालाजी ने भारत वासियों के उस वर्ग का भी वर्णन किया है जो स्वार्थ-सिध्दि के लिए अपने ही देशवासियों के विरूध्द शासकों को सहयोग दे रहे थे।

निरालाजी ने अपनी कविताओं में भारत के निवासियों के प्रति सोते रहने पर कडा विरोध किया है और कहा है, तुम्हें जगाते हुए सभी तारे हार गये हैं, अब तुम्हें जगाने के लिए बाल रवि की किरणों तुम्हारे द्वार पर आई हैं अब तुम जाग जाओ।[12] कवि आगे कहते हैं कि तुम्हारी आँखें बंधी हैं जो किस फूल का रस पीने के लिए उसकी गलियों में फँसी हैं। कवि भारत के निवासीयों से कहते हैं कि तुम नींद के कारण जो तुमने आँखें बंद कर ली हैं वे आँखें न जाने किस फूल का मधुरस पी रही हैं। और तुम्हारी इस आदत से भँवरों का गुंजन भी अब बंद हो गया है। कवि भारत वासियों से कहते हैं कि, प्रकृति में हमेशा परिवर्तन होता रहता है अब दिन गया है, रात आई है फिर रात गई है और दिन आया है और ऐसे ही संसार के कितने दिन , पखवाडा और महिनों, वर्षों का अवसर बीत गया है फिर भी मनुष्य जाग नहीं उठता।[13] इसमें कवि भारत भूमि के वासियों के प्रति प्रेम भाव प्रकट करते हैं।

इस प्रकार जो देश के निवासी सो रहे है उनसे कवि कहते हैं कि हमें पारतंत्र में रहना नहीं चाहिए। हमारा देश गणराज्य देश है। हमारे को आक्रमक गुलाम बनाना चाहते हैं। तुम्हारी यह सोने की आदत बुरी है। अगर हम जागते हैं तो दूसरे देश से अपने देश की रक्षा करेंगे जैसे सिंहनी अपनी गोद के अपने बच्चों को दूसरों को हाथ तक लगाने नहीं देती। जब तक सिंहनी के शरीर में प्राण रहता है तब तक वह अपने बच्चों का पालन करती है।[14]

निरालाजी ने "छत्रपति शिवाजी का पत्र" कविता में वर्तमान देश की दुर्दशा का वर्णन महत्वूपर्ण ढंग से किया है। अपने अपने अधिकारों के लिए भारत में हर कोई अपने सगे संबंधियों से लड रहा हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में आये मुसलमानों ने अपने ऊपर राज्य किया। और उन्होंने तो आगे भारत के सभी हिंदुओं में एक दूसरे के लिए लडने की प्रेरणा निर्माण की। इसलिए महाराज शिवाजी पत्र में राजा जयसिंह को लिखते हैं, देश वासियों की दुर्दशा को व्यक्त करते कवि कहते हैं, इस पेट के लिए मनुष्य कितना लाचार होता हैं, वह अपने ही भाईयों से लडता हैं और अपने यश के लिए अपने ही भाईयों का खून करता हैं।[15]

कवि कहते हैं, जरा सोचो जब स्वतंत्रता की रक्षा करने वालों की तलवार उठती हैं, तब उन वीरों को पराधीनता के न जाने कितने भयंकर दुःखों की स्मृति होती हैं। कवि महाराज शिवाजी के द्वारा अपने देशपर आक्रमण करने वाले मुसलमानों की भर्त्सना इस प्रकार करते हैं, हिंदुओं में एक भी बलवान राजा नहीं रहा है क्योंकि वे आपस में ही लडकर अपना बल नष्ट कर रहे हैं और हमारी शक्ति नष्ट होती दिखाई देती हैं। जिस प्रकार जंगल में दो सिंह अगर आपस में लडकर मरेंगे तो जंगल का राजा गीदड़ होकर सब सुख भोगेगा।[16]

महाराज शिवाजी अपने पत्र में राजा जयसिहं को लिखते हैं कि, इस देश की जनता का दुःख असहाय हो गया है। मुगलोंने इनपर इतना अत्याचार किया है कि दूसरे देखने वाले हाथ मलते रह गये हैं। और भारतीय हिंदुओं पर

मुगलों का असहाय अत्याचार हो रहा है जो भारत के हिंदू अपनी ताकद से सह रहे हैं।[17] महाराज शिवाजी आगे लिखते है कि इस संसार में अपनी ही छाया से धोखा होता है। हिंदु अपने ही भाईयों का घर लूटकर अपना घर भर लेते है। अपने ही भाईयों का घर लूटकर बडे आराम से रहते हैं। जो एक भिखारी स्वप्न में सुख का आनंद लेता है। सोचो कि मृत्यु का कोई दूसरा रूप अगर है तो वह दूसरा रूप तुम्हें हिंदुओं में ही दिखाई देता है।[18]

कवि आगे कहते हैं कि संसार में हमेशा दुःख ही रहता है। यह राज्य पीडाओं का राज्य है, तुम इस संसार में न आना। इस राज्य में क्रूर व्यक्ति ही शूर वीर कहलाते हैं। और जो हृदय का वीर होता है वह हमेशा दुर्बल लोगों की तरह अपना जीवन यापन करता है।[19] इस संसार की रीति रिवाजों पर और वर्तमान देश के वातावरण पर प्रकाश डाला है।

कवि ने आधुनिक युग की सारी भौतिक सुविधाओं पर भी प्रकाश डाला है। वर्तमान काल में मानव ने आपने निजी सुखों की प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक साधनों को खिलौना बना रखा है और उसने केवल धन को ही अपना एक मात्र लक्ष्य बना रखा है। इसी धनप्राप्ति में वह सबसे आगे जाना चाहता है।[20]

आज हमें जो राज्य दिखाई देता है उसकी रचना प्राचीन काल से चली आ रही हैं। भारत में जब विदेशी आक्रमण हो गये तो भारत में स्थित वर्णाश्रम की धार्मिक व्यवस्था टूटने लगी। जिससे लोगों की एक समानता में बाधाएँ निर्माण हो गयी। इसी कारण भारत में एक राज्य होने के बदले उन्होंने अपना-अपना राज्य निर्माण किया और भारत का छोटे-छोटे राज्यों में विभाजन हो गया।[21]

भारत के राष्ट्रीय नेताओं ने देशवासियों को देश की अवनति के मूल कारणों की ओर आकृष्ट किया था। आपने जनता को इस तथ्य से अवगत कराया कि जब तक देश के विकासात्मक तत्वों के मार्ग से राजनीतिक पराधीनता, परम्परागत रूढियों एवं अंधविश्वास संबंधी बाधाएँ दूर नहीं हो जाएगी, तब तक देश स्वतंत्र नहीं हो सकता।

3·4 देश की तत्कालीन आर्थिक दुर्दशा :-

देश की पारतंत्रता से आर्थिक परवशता, दैन्य और दुःख की ही परिणती साध्य होती है। निरालाजी की मान्यतानुसार राजनीतिक स्वतंत्रता का लक्ष्य आर्थिक स्वतंत्रता की उपलब्धि है, अत एव राजनीतिक स्वतंत्रता साधना है और आर्थिक स्वतंत्रता साध्य। निरालाजी के अनुसार घोर आर्थिक वैषम्य राष्ट्र की दुर्दशा का प्रमुख कारण है।

निरालाजी ने भी देश की आर्थिक दुर्दशा पर कडा व्यंग्य किया है। हमारे देश में प्राचीन काल से ही कृषक समाज का आर्थिक शोषण होता आया है। प्राचीन काल में जमींदार, साहूकार उनका आर्थिक शोषण करते थे। अब भारत स्वतंत्र हो गया है फिर भी कृषक समाज की आर्थिक स्थिति बलवान नहीं हो पायी है। अब भी उनका शोषण पूंजीपति वर्ग और राजनीतिक लोग कर रहे हैं। निरालाजी ने ऐसे ही कृषक का वर्णन किया है, हे विप्लव के वीर जीर्ण बाहू और दुर्बल शरीर से किसान तुम्हें बुला रहा है जिसके शरीर से सारा रस चूस लिया है अब उसके शरीर में सिर्फ हाड मात्र आधार रहा है अब उसे तुम अपने सागर में समाहित करो।[22]

निरालाजी ने एक भिक्षुक का वर्णन किया है, और भारतीय आर्थिक दशा पर प्रकाश डाला है। हमारे समाज में आज भी भिक्षुक की स्थिति वैसी ही है जैसी पहले थी। इस समाज में उसका बुरा हाल है। भारत में ज्यादातर भिक्षुक आर्थिक दशा के मारे हो जाते हैं। निरालाजी ने आर्थिक दशा के कारण भिक्षुक का वर्णन इस प्रकार किया है, भिक्षुक अपना पेट और पीठ मिलाकर सडक पर चल रहा है और साथ में छोटी लाठी टेककर मुठ्ठीभर दाने के लिए वह मुँहफटी झोली फैलाते भीख माँग रहा और अपनी भूख मिटाने का प्रयास कर रहा है।[23]

निरालाजी ने अपनी आर्थिक दशा का वर्णन "सरोज स्मृति" में किया है। जिससे यह मालूम होता है कि कवि को भी आर्थिक दशा का जबरदस्त धक्का लगा है। अगर कवि के पास आर्थिक दशा अच्छी होती तो वह अपनी पुत्री का

इलाज करते और सरोज को मृत्यु से बचा लेते। इसलिए कविने भी अपनी आर्थिक दशा का वर्णन इस प्रकार किया है, कवि मानते है कि मैं एक निरर्थक पिता साबित हो गया हूँ क्योंकि कभी मैंने तुम्हारा हित नहीं किया, और मैं सदा ही अर्थ कमाने के मार्ग में पीछे रहा हूँ और आर्थिक संकट से टकराता रहा हूँ और मैं सदा ही आर्थिक पथ पर हारता रहा हूँ।[24]

यहाँ निरालाजी ने अंतर्विरोध के आर्थिक पक्ष पर बल दिया है। निरालाजी कहते हैं आर्थिक जीवन के कारण समाज में जमींदार और पूँजीपति महान हो गये हैं, जमींदार और महाजन दोनों मिलकर समाज में धनी हो गये हैं। जिस प्रकार मरे हुए पिशाच भी समाज के ऊपर अपना अधिकार बनाकर रखना चाहते हो।[25]

कवि ने भारत की आर्थिक दशा के सुधार का उपदेश किया है। आर्थिक दशा समान होने से ही समाज सुखी हो जायेगा और देश की उन्नति हो जायेगी। कवि ने माता सरस्वती को भारत के लोगों को फिर से ज्ञान का भण्डार प्रदान करने के लिए कहा है, जिससे उनके ज्ञान से उन्हें धन मिल जाय और वह सुखी हो जाय।[26]

साथ ही कवि भारत वासियों की वर्तमान अवस्था का यथार्थ चित्रण अंकित कर विश्व में भारतीय वाणिज्य के प्रसार को भारत की आर्थिक उन्नति का मूलाधार मानता है।

3·5 नारी चित्रण :-

समाज में द्विज और शूद्र का भेद उत्पन्न हुआ, तब उसके साथ स्त्री-पुरूष में छोटे-बडे का भेद भी निर्माण हुआ। भारत में प्राचीन काल से ही नैतिक धरातल पर नारी को सामान्य माना गया है। नारी आज पुरूषों के हाथ का खिलौना तथा भोगवासना की ही वस्तु बनकर रह गई है। नारी का अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। उसकी भावनाओं का कोई मूल्य हमारे समाज में नहीं है। प्राचीन और अर्वाचीन मनीषियों एवं सार्वजनिक नेताओं के इन विचारों से हिंदी कविगण प्रभावित हुए। उन्होंने नारी की दयनीय दशा को काव्य में प्रतिबिम्बित करते हुए, उसे उसके सम्मानित पद पर आसीन करने का प्रयास किया।

समाज में ऊँच-नीच का भेद मिटाना निरालाजी के लिए एक राजनीतिक कर्तव्य था, उसी तरह नारी के समान अधिकारों का संघर्ष स्वाधीनता आन्दोलन का अभिन्न अंग था। स्त्रियों के सामाजिक पराधीनता का मुख्य कारण उनकी आर्थिक पराधीनता है। निरालाजी का कहना था कि इस घरेलू दासता का अंत होना चाहिए। देश के राजनीतिक-सांस्कृतिक जीवन में पूरी शक्ति नहीं आ सकती जब तक समानता के आधार पर पुरूषों के साथ स्त्रियाँ भी भाग न लेगी। नारी की स्वतंत्रता ही उनके जीवन का विकास करेगी। निरालाजी नारी स्वतंत्रता के समर्थक हैं।

निरालाजी के काव्य में भी नारी का चित्रण हमें सूक्ष्म रूपसे देखने मिलता है। निरालाजी के काव्य में नारी का चित्रण मानवीकृत प्रकृति के आरोपण के रूप में मिलता हैं। सदा जाग्रत नायिका का चित्र इस प्रकार है, प्रिय यामिनी अब जाग गयी हैं, अपने अलस आँखों से सूर्य की ओर देख रही है जो उसके प्रेमी के जैसा दिखाई देता है। वह यामिनी तरूण प्रेमिका के रूप में चित्रित है।[27]

नायिका की छोटी-से-छोटी मुद्रा भी इस चित्र में छूट नहीं पायी है। "जुही की कली" के रूप में निरालाजी ने नारी के प्रेमी हृदय को पहचाना है। "जुही की कली" बिरह से व्याकुल बनी प्रिया को छोडकर मलयानिल दूर देश में गया था। जब उसका प्रिया दूर देश से उसके पास रात्री की चंद्रमा में आता है तो अपने प्रिया को अपने पास देखकर जुही चौंक जाती है।[28]

निरालाजी ने "प्रेयसी" कविता में नारी के पूर्ण समर्पण का चित्रण किया है। "प्रेयसी" कविता में नायिका प्रण की प्रलय में वह समस्त सीमाएँ खो बैठती है। समाज बंधनों से बंधी युवती अंत में प्रिय कंठ से जा लगती है। वह उसके जीवन का वीणा में भरा हुआ झंकार सुनती है और अपने को बंधनों से मुक्ति पाती है।

संयोग शृंगार के इस प्रकार के विविध चित्रों के साथ निरालाजी ने वियोग शृंगार के भी सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया हैं। निरालाजी की कविता में वियोगिनी

नारी के चित्र भी अत्यंत गंभीर भाव भर देते हैं। "शेष" कविता में वियोग की आशंका से कम्पित नारी का चित्र प्रस्तुत है। वियोग-शृंगार के इस चित्र में कवि ने ऋतु चक्र की गतिशीलता के संकेत द्वारा वियोग की अनिवार्य स्थिति को स्पष्ट किया है, प्रियतम अपनी नायिका से कहता है कि ऐसा भी एक दिन होगा कि मैं तुम्हारे पास नहीं हूँगा।[29]

इस प्रकार यहाँ भी कवि दार्शनिक गम्भीरता का भाव भर देता है। वियोग की गम्भीर व्यथा को कविने "विफल-वासना" में व्यक्त किया है। इस कविता में लौकिक विरह का चित्रण किया है पर इस कविता में रहस्यात्मकता का समावेश है। नायिका कहती हैं कि मैंने अब तक मेरा यौवन सँम्हलकर रखा था और मैंने तुम्हारे वियोग में अपना सारा यौवन न्योछावर कर दिया है। तुम्हारे वियोग में एक ही मुझे आशा थी कि तुम एक दिन जरूर आओंगे परंतु तुम्हारे वियोग में मुझे सिर्फ दुःख ही दुःख देखने को मिला है।[30]

निरालाजी के प्रेम-गीत उदात्त भावना से युक्त रहते हैं। इनमें शारीरिक हावभावों के बाह्य और स्थूल कामुक चित्र नहीं हैं। उनके स्थान पर मानसिक वृत्तियों के सूक्ष्म विराट चित्र हैं। निरालाजी के हृदय का रतिभाव अपार आल्हाद से युक्त है।

निरालाजी ने अपनी कविताओं में नारी का चित्रण संयोग-वियोग वर्णन दोंनो रूपों में भी किया है। परंतु आपने भारतीय नारी का चित्रण अपने काव्य में शोषित, दुःखी के रूप में किया है। निरालाजी की "विधवा" कविता नारी चित्रण के लिए महत्वपूर्ण है। इस कविता में भारतीय समाज में विधवा का उपेक्षित स्थान दिखाया है। निरालाजी ने दलित भारत की विधवा का अत्यंत करूण चित्र अंकित किया है, वह विधवा जिसकी पूजा की जाय और मंदिर में जलते दीप की लौ जैसी शांत स्वभाव में लीन होकर बैठने वाली, मन में तांडव नृत्य की स्मृति में खोई हुई और टूटे हुए तरू की तरह यह भारत की विधवा हैं, जिसका जीवन दुःख का सागर है।[31]

निरालाजी ने विधवा का वर्णन बडे करूण शब्दों में किया है। विधवा का जीवन दुनिया में रहकर भी उसे अपनी व्यथा, कोमल भावना को व्यक्त करने की अनुभूति नहीं होती। विधवा नारी को जीवन के सभी सुख साधनों को त्यागकर समाज के अन्याय को सहन करने के लिए बाध्य की जाती है। उसकी आन्तरिक पीडा उसे तिल-तिल करके गलाती रहती है। दलित भारत की यह विधवा प्रभावोत्पादक चित्र के ही कारण पाठक की संवेदना की सहज ही कारूण्यमयी मूर्ति बन जाती है। कभी किसीने विधवा स्त्री के अश्रुजल को पोछा नहीं है। जिस प्रकार पत्ते पर पडी हुई ओस की बुंद झड जाती है उसी तरह विधवा के आँसू भी झड जाते हैं और भारत की विधवा का चित्र हमारे सामने आता है।[32]

निरालाजी ने "तोडती पत्थर" में भी नारी चित्रण किया हैं। जो नारी गृहस्वामिनी होनी चाहिए वह इलाहाबाद के रस्ते पर पत्थर तोडने का कार्य करती है। ऊँचे-ऊँचे महलों को लगनेवाले पत्थर को वह तैयार करती रहती है। भारत की नारियों का वर्णन कितना करूणामय है। उसमें वह नये विश्व की निर्मिति का प्रारंभ देखता है। कोई साथ आये न आये, कवि भी साथ न दे तो भी वह अकेली विद्रोह करना चाहती है। तभी वह -'मैं तोडती पत्थर' कहती हैं।

निरालाजी की "तुलसीदास" कविता में नारी की महत्ता स्थापित की हैं। "तुलसीदास" में नारी की एक स्वतंत्र और उच्चतर सत्ता भी है। तुलसीदास का नारी के प्रति दृष्टिकोन अप्रत्यक्षतः नारी स्वतंत्र्य आन्दोलन की अभिव्यक्ति माना जा सकता है। तुलसीदास में नारी के साधारण मानवी रूप का अवसान होता है। वह एक प्रेरक और असाधारण दैवी रूप में प्रतिष्ठित है। रत्नावली तुलसीदास के आत्मदर्शन की प्रेरणा बनती है। तुलसीदास का कवि समग्र सृष्टि को नारीमय बनाकर चला है।

निरालाजी के काव्य में नारी का चरित्र अनेक रूपों में हमें देखने मिलता हैं। निरालाजी के जीवन में नारी का महत्व आपकी माता के देहावसान के बाद में देखा जाता है। आपने बचपन से ही नारी के महत्व को जान लेने का प्रयत्न

किया है। इसी कारण निरालाजी के काव्य में नारी चित्रण को महत्वपूर्ण ढंग से देखा जा सकता है। निरालाजी पुरातन भारतीय संस्कृति की विचारधारा के अनुकूल नारी को समाज में उच्च स्थान दिलाने के पक्ष पाती है और आप आधुनिक युग की विचारधारा के अनुसार नारी की स्वतंत्रता के समर्थक हैं।

3·6 तत्कालीन सामाजिक वर्णन :-

निरालाजी की कविताओं में प्रारंभ से ही सामाजिक वर्णन किया गया है। आपने कविता के माध्यम से सारे समाज का चित्र हमारे सामने रखा हैं और उनपर कडा व्यंग्य किया है। निरालाजी की "वन-बेला", "सरोज स्मृति", "तोडती पत्थर", "तुलसीदास", "राम की शक्ति-पूजा" आदि कविताओं में सामाजिक वर्णन देखा जाता है।

"वन-बेला" कविता में मध्यम वर्गीय समाज के बुध्दिवादी नारेबाजी पर कडा व्यंग्य है। कवि को अपना ईमानदारी से व्यतीत किया गया जीवन व्यर्थ ही प्रतीत होता है। कवि राजपुत्र बन जाता तो विद्वान उसके सेवक बनते हैं,, अनेक समाचार पत्र उसकी स्तुति करते हैं, उसके जीवन-चरित्र या जीवन पर अग्रलेख लिखते या उसका बडा चित्र छापते हैं। वह पैसे में दस-दस राष्ट्रीय गीत रचने कहता हैं और वह हिंदी सम्मेलन में सम्मान पद प्राप्त करता हैं। इसमें निरालाजी ने सामाजिक जीवन के धनिक लोगों के ऊपर कडा व्यंग्य किया है। "वन-बेला" का व्यंग्य बहुमुखी है, यहाँ कवि की सामाजिक चेतना सृजनात्मक है।

निरालाजी ने "सरोज स्मृति" में तो सामाजिक वर्णन का महत्वपूर्ण चित्रण किया है। अपनी पुत्री के विवाह के लिए अपने भारत की दहेज प्रथापर कडा व्यंग्य किया है। निरालाजी ने इस कविता में कान्य कुब्जोंपर कटुतम व्यंग्य किया है। समाज में कान्यकुब्ज कुल महत्वपूर्ण है। परंतु यह समाज जिस पत्तल में खाता है उसी में छेद करता है। कवि आगे कहते हैं कि मेरी पुत्री सरोज इनके हवाले कर दूँगा तो ये लोग अर्थ के लिए पुत्री को मार देंगे। इस समाज के बोलने में भी विष होता है, इनके हृदय में कभी सुख, शांति नहीं हो सकती।[33]

"राम की शक्ति पूजा" में राम सत्य की प्रतिष्ठा के लिए ही शक्ति की पूजा करते हैं। सत्य समाज का प्राप्तव्य है, इसलिए इस कविता में सामाजिक चेतना का वर्णन मिल जाता है। "तुलसीदास" में सत्य की स्थापना द्वारा समाज को प्रेरणा दी गई है। कथा के भीतर भी कवि ने समाज में शूद्रों की पतितावस्था का चित्रण किया है।

निरालाजी ने "तोडती पत्थर" में तो सामाजिक जीवन पर कडा व्यंग्य किया है। अपने समाज के भेद-भाव का वर्णन इस कविता में रस्तेपर पत्थर तोडनेवाली स्त्री के माध्यम से किया है। पुरूष प्रधान समाज में स्त्री का वर्णन करना समाज के लिए प्रेरणादायी सिध्द हो सकता है। निरालाजी की कविताओं में इस प्रकार का चित्रण दिखाई देता हैं कि, देश की उन्नति के लिए समाज के सभी वर्गो का सहयोग अपेक्षित हैं और काई भी वर्ग किसी भी दृष्टि से न्यूनाधिक नहीं है, वरन सभी वर्ग राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है।

3·7 शोषित वर्ग की दुरावस्था का वर्णन :-

धन का अत्याधिक मोह मानव-मन में अनियंन्त्रित प्रतियोगिता की भावना को जन्म देता है। फलतः एक ओर जीवन के समस्त वैभव एकत्र हो जाते हैं, और दूसरी ओर पीडित वर्ग का जीवन यंत्रवत नीरस हो जाता है। विशाल भारत देश की अधिकांश जनता मेहनत मजदूरी करने वाली है। किसान, मजदूर लोगों का यह भारत देश बडे अमीर लोगों को नजर नहीं आता

किसान तो हमारे राष्ट्र के मेरूदण्ड हैं, अन्नदाता हैं, जिन्हें अंग्रेजी शासन काल में दीन-दरिद्र बनना पडा है और जमींदार प्रथा ने उन्हें चूसकर बरबाद कर दिया। कृषकों की दयनीय अवस्था का विस्तृत वर्णन अनेक कवियों ने किया है। निरालाजी ने किसानों का वर्णन अपनी कविता में किया है। आपने समाज के द्वारा किसानों पर होनेवाले अत्याचार का वर्णन किया है। आप "बादल-राग" में कहते है, समाज में कृषक व्यक्ति का जीवन कितना दुःखपूर्ण होता है। किसान अपने दुर्बल शरीर से बाहु ऊपर उठाकर आधार देने वाले विप्लव के वीर को बुलाता

हैं। पूंजीपतियों ने किसान का सारा खून चूस लिया है अब उसके शरीर में सिर्फ हाड-मात्र ही रह गये हैं, जिससे उसका जीवन दुःखपूर्ण हो गया है।[34]

"बादल-राग" में कवि दलितों-शोषितों और उपेक्षितों का पक्षधर बनकर आता है। किसानों के साथ-साथ दीनों के प्रति भी निरालाजी के करूणा के भाव को "भिक्षुक", "तोडती पत्थर", "विधवा", "दीन", "दान" कविताओं में स्पष्ट देखा जाता है।

"भिक्षुक" का चित्र भी करूणा को उभारता है। उसकी स्थिति और स्वरूप का अंकन सीधी-सादी भाषा में बिना किसी कल्पना-विलास के भी प्रभावशाली हुआ है। कवि ने भिक्षुक की दयनीय अवस्था का वर्णन बडे मार्मिक शब्दों में किया है, भिक्षुक अपने दोनों पुत्र लेकर पथपर आकर पछताता रहा है और अपना पेट और पीठ दोनों मिलाकर लाठी टेककर पथ पर चल रहा है, जो अपनी भूख मिटाने के प्रयास में है।[35]

इस कविता में भिक्षुक की करूण व्यथा का चित्रण स्पष्ट है। यह चित्र मानो हमारे सामने आकर खडा होता है। समाज में आर्थिक परिस्थिति के कारण भिक्षुक का शोषण जिस प्रकार होता है इसका वर्णन निरालाजी ने अपनी ओजपूर्ण भाषा के द्वारा हमारे सामने रखा है।

"तोडती पत्थर" कविता में तो निरालाजी ने नारी समाज का चित्रण महत्वपूर्ण ढंग से चित्रित किया है। समाज में नारी का स्थान भी कितना गिरा हुआ है। इलाहाबाद के पथ पर गर्मियों के दिनों में झुलसती लू में, छायाहीन स्थान पर काम करती पसीने से तर नारी को देखकर कवि की करूणा विगलित होती है। वह नतशिर कुछ भी न बोलकर दलितों की सारी व्यथाओं को व्यक्त कर देती है। निरालाजी ने पत्थर तोडनेवाली स्त्री का इस प्रकार चित्रण किया है, स्त्री अपने काम में मग्न थी पर दूसरे ही क्षण वह काफी सुधर गयी थी। उसी समय उसके माथे से पसीना गिर पडा और वह स्त्री अपने काम में मग्न होती अपने से ही

कहती हैं, "मैं तोडती पत्थर।"[36]

"विधवा" में विधवा स्त्री के प्रति समाज में होनेवाले अत्याचार और उसके दुर्भाग्य की यथार्थ करूण कहानी है। यह असहाय, कुण्ठित और दुःखी नारी का करूण चित्र है। वह हाहाकार करती हुई जीती है और उसकी आँखें करूण-रस से भरी है। विधवा का दुःख समाज में रहनेवाला मनुष्य समझ नहीं सका इसलिए निरालाजी कहते हैं, विधवा अपने दुःख को दुनिया की नजर से बचाकर चुपचाप रोती रहती हैं, परंतु विधवा का दुःख मनुष्य के सिवाय आकाश, वायु और पवन सुनता है परंतु सरिता की लहरें तो विधवा का दुःख ठहर-ठहरकर देखती हैं।[37]

इस विधवा का दुःख सुनने की ताकद मनुष्य में नहीं है। हमारे समाज में कितनी दुःख पूर्ण बात है कि, मनुष्य का दुःख मनुष्य समझ नहीं पाता। इस कविता में निरालाजी ने पूँजीवाद से अभिशप्त भारतीय निम्नवर्गीय श्रमिक विधवा की दीन-हीन दशा का हृदयद्रावक वर्णन किया है।

"दीन" कविता में भी दलित लोग अपना सारा दुःख चुपचाप सह लेते हैं। दुःख के बारे में कुछ नहीं बोलते। वे दुनिया की ओर करूण दृष्टिसे देखते हैं ताकि कोई तो होगा कि जो उनका दुःख दूर करेगा। कवि कहता है कि, पीडा की निरंकुश नग्न क्रीडा को दीन दलित चुपचाप सह जाता है, अपनी व्यथाएँ दीन दृष्टि से संसार के सम्मुख रख जाते हैं। कवि आगे कहते हैं, तुम लगतार दुःखों को सहन करते रहने के कारण तुम्हारा हृदय दुर्बल हो गया है और वह हृदय कभी-भी टूट सकता है। तुम अपनी इस दुःख पूर्ण हृदय की पीडा को अंतिम आशा के कानों में हम सब स्पंदित प्राणों से, धीमे से लेकिन यह कह जाते हैं कि हमारा करूण कण्ठ सुनकर यह संसार तुम्हारी सहायता कर सके।[38]

समाज व्यवस्था ऐसी कठोर और क्रूर है कि, दलितों के जागरण को वह निर्मम प्रहारों से कुचल देती हैं। दलित को जीना हैं तो आँखें मूँदकर, निद्रा का स्वाँग रचकर पीडा को सहना पडता है। स्वार्थ से भरपूर समाज के अधिनायक दलितों

को उठने नहीं देते। "दीन" कविता में यही करूणा केन्द्रीय भाव है। संसार की विषम विद्रूपता का चित्रण कर उसके प्रति आक्रोश की भावना भी यहाँ मिलती है। यह भारतीय समाज के दलित वर्ग के प्रति संबोधन है। इस संसार के दुःख को देखकर कविता का दलित कहता है, यह संसार सारा दुःख का ही है और तुम इस राज्य में कभी मत आना क्योंकि यहाँ सदा ही दुःख उठाना पडता है और क्रूर लोग ही शूर वीर कहलाते हैं और जो हृदय के शूरवीर होते हैं वे सदा ही हृदय से दुर्बल रहते हैं।[39]

"दान" कविता में भी निरालाजी ने भिक्षुक का चित्र प्रस्तुत किया है। इस कविता में मानव से घृणा रखकर भक्ति के बाहय उपकरणों को जड रूप में स्वीकार किया है। "दान" का सशक्त व्यंग्य समस्त समाज को चुनौती देनेवाला चित्र है। धर्म के नाम पर जो अमानुषिक कृत्य समाज में प्रचलित हैं उसका एक भयानक दृश्य "दान" कविता में है। निरालाजी ने भिक्षुक का वर्णन इस प्रकार किया है, एक भिक्षुक अपने अस्थिपंजर शरीर को लेकर मृत्यु के पथपर बैठा था और उसकी नजर भिक्षा के लिए चंचल हो उठी, भिक्षुक का कंठ अतिक्षीण हो गया था और उसकी सांस भी जोरों से चल रही थी जैसे वह जीवन से उदास हो जाता था।[40] पुए बंदर को खिलाये जाते है और भूखा मानव वैसेही पडा रह जाता है।

इस प्रकार निरालाजी ने समाज में - - शोषित व्यक्तियों का वर्णन अपने कविताओं में किया है। जिससे समाज में रहनेवालों शोषित व्यक्ति अपना मनोबल बढाकर समाज में खडा हो सके।

3·8 क्रांति की प्रेरणा :-

भविष्य के सुखी जगत को साकार करने का एक मात्र उपाय है, क्रांति। क्रांति जीवन की स्वाभाविक गति है। यह क्रांति क्षणिक अथवा ग्लानि के फलस्वरूप उत्पन्न नहीं होती, प्रत्युत युगों के अत्याचार और उत्पीडन को सहते-सहते छोटे-मोटे विरोध प्रकट करने के उपरान्त सहसा क्रांति का जन्म होता है। भारत में

ब्रिटिश शासन के अत्याचारों ने जनता में उसके प्रति विरोध उत्पन्न किया। परिणाम स्वरूप विभिन्न आन्दोलनों की अहिंसात्मक और हिंसात्मक क्रांतियों द्वारा देशवासी स्वतंत्रता की ओर अग्रसर हुए। राजनीतिक विचारधाराओं को व्यापक बनाने और जनता को उद्‌बुद करने के लिए कवियों ने अंग्रेजों के प्रति असंतोष का भाव व्यक्त किया। उन्होंने उस क्रांतिकारी के गीत गाए जो क्षुब्ध होकर शत्रु को अपने संमुख झुका दे।

निरालाजी क्रांति के कवि हैं, उस क्रांति के जिसका लक्ष्य भारत को विदेशी पराधीनता से मुक्त करना ही नहीं, जनता के सामाजिक जीवन में मौलिक परिवर्तन करना भी है। निरालाजी का यह क्रांतिकारी भाव आरंभ से अंत तक बराबर रहा है। निरालाजी की स्पष्ट मान्यता हैं कि राष्ट्र के समविकास की आवश्यकता तो सभी की हैं किन्तु जो नितांत पददलित, शोषित एवं हीन हैं, सबसे पहले उन्हें उठाना होगा जिससे वे अन्य वर्गों के समान हो सके और तभी सर्वजन - विकास की रूपरेखा संभव हो सकती है।

कहीं धारा, कहीं बादल, कही शिव और काली का वर्णन कर निरालाजी ने क्रांति का चित्रण किया है। क्रांति की मूल प्रेरणा मानव-करूणा हैं जो मनुष्य का दुःख दूर करना चाहती है। क्रांति का विनाशात्मक उद्देश्य तात्कालिक और अस्थायी है। निरालाजी "धारा" कविता में कहते हैं, हमारे सारे बंधन अब खुल गये हैं और हमारे प्राण अब मुक्त हो गये हैं जो संसार का करूणा क्रंदन, स्वर था अब वह रूका हैं।[41]

इस कविता में सामाजिक क्रांति का उद्देश्य दिखाई देता हैं। निरालाजी क्रांति के द्वारा बादल को विप्लवी रूप दिखाकर क्रांतिकारी चेतना निर्माण करना चाहते थे। निरालाजी ने "बादल राग" कविता में बादल का जो रूप दिखाया हैं वह विप्लवी रूप हैं, बादल ने जनता को भयभीत किया हैं और उसे अपने खुशी कोश में बंद किया हैं। अब उसका सब कुछ छिन लिया गया हैं परंतु स्त्री का आलिंगन

करके भी वह भयभीत होता दिखाई देता है और बादल की गर्जना से अपने मुख और नयन को छुपा रहा है।[42]

इसमें विनाशकारी चित्र प्रस्तुत किया है। बादल की वज्र हुंकार सुनकर संसार काँप उठाता है, छोटे-छोटे पौधे वर्षाजल पाकर लहरा उठते हैं और वे बादल को संकेत से बुलाते हैं । बादल का जल अट्टालिका पर नहीं ठहरता वह कीचड में पहूँचकर वहाँ कमल खिलाता है। यहाँ बादल क्रांति का केन्द्रीय प्रतीक है। क्रांति एवं विप्लव की सर्वाधिक आवश्यकता दुर्बल व्यक्ति, वर्ग एवं समाज को होती हैं। भय की समाप्ति शक्ति का ही विकास हैं। शक्ति के स्वरूप का स्पष्टीकरण करते हुए निरालाजी "जागो फिर एक बार" में कहते हैं, समाज में एक शेष माता ही रहती है जो अपने दुर्बल को छिनती हुई देखती है तो वह क्रोध में आती है तभी उसकी आँखों से आँसू निकल आते हैं।[43]

निरालाजी की क्रांति की भावना का रौद्ररूप "आवाहन" नामक कविता में मिलता है। कवि "श्यामा" को नृत्यमग्न देखकर क्रांति का शंखनाद करते हैं, माता से प्रार्थना करते हैं कि तू अब एक बार नाच दे तो इस तेरे नृत्य से सबको आनन्द होगा और विश्व की रस वीणा के सारे तार तेरे नृत्य से टूट जायेंगे। बाद में संसार के कोमल छन्द बंद हो जायेंगे और संसार में प्रलयकारी गीत का आलाप होगा और मृदंग के सुन्दर स्वरों से कलापों में ऊँची लहरों की भीगिमा आ जाएगी।[44] इसमें निरालाजी ने न्याय-सम्मत राज्य की स्थापनार्थ देवी दूर्गा का आवाहन किया है। निरालाजी देशवासियों के इस आक्रोश को भैरव रूप देने के लिए दूर्गा से उसके चण्डी रूप का प्रदर्शन करने की प्रार्थना करते हैं।

निरालाजी मानते हैं देश की शक्तियों के एकीकरण, स्वार्थ का त्यागकर, राष्ट्रीय हित-चिंतन एवं साम्राज्यवादियों के अंत द्वारा ही देश की स्वतंत्रता संभव है। "छत्रपति शिवाजी का पत्र" में शिवाजी महाराज राजा जयसिंह से लिखते हैं कि, अगर हमारे परिवार में एक शक्तियों का प्रदर्शन होगा तो सब में सम्वेदना

फैल जायेगी। व्यक्तियों का झूठ अगर जातिगत हो जाय तो इस मुगल साम्राज्य का ध्वंस होने में देर न लगेगी। इन साम्राज्यवादियों में आज जो भोगविलास के विचार हैं वे सब नष्ट हो जायेंगे। इन लोगों की एकता से भारत की गई हुई ज्योति फिर से वापस आयेगी और भारत फिर से अपने घोर अपमानसे मुक्त हो जायेगा। हमारे ऊपर जो मुगल साम्राज्य है वह नष्ट हो जायेगा और हम आजाद हो जायेंगे।[45]

क्रांतिकारी कविका एक प्रतीक निर्झर भी है। इसमें और बादलवाले प्रतीक में अन्तर हैं कि विरोधी शक्तियाँ निर्झर के लिए बहुत प्रबल हैं। "स्वागत" कविता में निरालाजी कहते हैं, कॉटे और कीचड से भरी हुई राह भयप्रद है। रास्तें में वन्य पशु और हिंस्त्र निशाचर हैं, ऊपर से उपल वृष्टि होती है, ग्रीष्म का ताप और जाडे की ठिठुरन सहनी होती है। किन्तु निर्झर अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहता हैं। मेहनत से घबराता नहीं है। मेहनत करता है और उसे सफलता मिलती है।[46]

निरालाजी परतंत्रता-जन्य निराशा एवं दुरावस्था का चित्रण करके ही सन्तुष्ट नहीं पा लेते वरन जागृति का सन्देश देकर कर्तव्य बोध को प्रेरित करते हैं। निरालाजी ने प्रारंभिक कविताओं में अंग्रेजों के अत्याचार को स्पष्ट किया है। क्रांति का यह दर्शन कल्पना पर आधारित न होकर युग की आवश्यकता का पर्याय है। स्वतंत्रता की उपलब्धि हेतु निरालाजी क्रांति का आवाहन करते हैं। कवि कहता है झरर-झरर करके नगारों से घोर आवाज निकल रही है। और कड्-कड् और सन्-सन् करके बन्दुकें और अरर-अरर के तोप चल रही हैं। रणभूमि में भयानक धुआँ फैला हुआ है और सैकंडो ज्वालामुखी भयानक आग उगल कर आकाश और धरती को हिला रहे हैं।[47]

निरालाजी और अन्य वेदान्ती क्रांतिकारियों में अन्तर यह है कि निरालाजी भौतिक समृध्दि को वांछनीय समझते हैं। व्यापार, औद्योगीकरण, अन्य देशों से आर्थिक संबंध ये सब निरालाजी के चिन्तन में सफल क्रांति के अंतर्गत हैं। निरालाजी भारत के निवासियों से कहते हैं कि, हे जीवन के धनि भारत विश्व के बाजार को प्रिय

है। अब तुम जागो। कवि का कहना हैं कि अब भारत भर दुःख का संपूर्ण अंधकार छाया हुआ है। वीरता रूपी सूर्य की सारी पंखुडियाँ ढँक गयी है। अतः हे दिन मणिके तुम अपने ही सुंदर हाथों से उषा के द्वार का मार्ग खोलो।[48]

निरालाजी के चिंतन में क्रांतिकारी वीर और जनता का गहरा संबंध है। निरालाजी ने इससे भी बडा काम यह किया है कि दूसरे महायुध्द के बाद भारत में जो क्रांति उभर आयी उसका अनुपम चित्रण किया है। इस दृष्टिसे निरालाजी का काव्य सच्चे अर्थो में जनसाधारण किसानों और श्रमिकों का काव्य है। हमारी दृष्टिसे निरालाजी आधुनिक युग के विश्व के क्रांतिकारी कवियों में से एक है।

3·9 सुखी समाज का चित्र तैयार करना :-

निरालाजी ने स्वातंत्र्योत्तर भारत के सुखी समाज का चित्र स्पष्ट करने पर अपना सारा लक्ष्य केन्द्रित किया है। आपने अपनी अनेक कविताओं में भारत के सुखी समाज का वर्णन किया है। निरालाजी ने भारत के स्वतंत्रता पाने के बाद समाज का चित्र कैसा हो इसका वर्णन किया है और वह हमें किस तरह प्राप्त हो सकता है।

निरालाजी ने स्वतंत्रता के बाद सुखी समाज का चित्र इस प्रकार चित्रित किया है, अब सब दिशा ज्ञान जाग गया है अर्थात भारत की पूर्व दिशा में स्वतंत्रता का ज्ञान रूपी सूर्य नवीन रथ लेकर आकाश में आया है। कवि आगे कहते हैं कि मेरी आँखें जो रात्री के अंधकार में बंद थीं। अब इस सूर्य के साथ खुल गयी हैं। और पूर्व के अंधकार का नाश होते हुए देखकर स्नेह से हमारे मुखपर मुस्कान दिखाई दे रही है।[49]

निरालाजी आगे कहते हैं कि, अब भारत के निवासियों को नींद में रहना नहीं चाहिए। क्योंकि अब भारत की पूर्व दिशा में सूर्य का उदय हो गया है। कवि भी अपने कंठ से सरस्वती तथा भारत माता के प्रति अपना प्रेम व्यक्त कर रहा है। कवि कहता हैं कि जिस तरह प्रकृति में हरबार परिवर्तन होता रहता

है उसी तरह हमारे जीवन में सुख-दुःख का परिवर्तन होना चाहिए। जिस प्रकार दिन गया, रात आई, फिर रात गई और दिन आया ऐसे ही संसार चलता है और दिन के बाद पक्ष और पक्ष के बाद मास आये हैं ऐसे कितने वर्ष बीत गये हैं फिर भी मनुष्य अपने सुख को देखता नहीं।[50] निरालाजी कहते हैं सुखी समाज का चित्र हमेशा बदलता रहा है।

निरालाजी सुखी समाज के लिए सरस्वती माता से भी प्रार्थना करते हैं। भारत के सुखी समाज के लिए आर्थिक समानता महत्वपूर्ण मानते हैं और इसके साथ-साथ ज्ञान का भी होना महत्वपूर्ण है। निरालाजी सरस्वती माता से कहते हैं कि भारत के प्रत्येक घर में असुन्दरता दिखाई देती है। तुम अपनी तूलिका से रंग-रंग कर उसमें परिवर्तन करने का प्रयत्न करो और मानव के जीवित रहने के साधन को जुटाने का उसे मार्ग दिखाओं कि जिससे उसके घर में ज्ञान और धन का दर्शन हो और वह सुखी हो जाय।[51]

भारतीय समाज के कुछ कायर, डरपोक, कपटी और राक्षसी वृत्ति के लोगों के कारण कई लोगों को सुख नहीं मिलता। इनका भी वर्णन निरालाजी ने किया है। इन लोगों के कारण ही सामान्य मनुष्य माता से कहता है कि, हमारा जीवन इतना धन्य कहाँ है कि तुम्हारे चरणों में आकर प्रातः कला का धन प्राप्त कर सके और इस धन की प्राप्ति के लिए तुम्हारे चरणों में आकर अमर हो जाय।[52]

निरालाजी भारत के निवासियों से कहते हैं कि अब हमारे यहाँ सुख के सूर्य का उदय हो गया है। अब तुम निराशा का जीवन मत जीओ। कवि मानव से कहता है, तुम अपनी बन्द आँखों को खोलो और देखो कि बीती हुई स्वप्न की रात्रि के अंधकार नष्ट हो गए हैं। अब तुम भारत की स्वतंत्रता की नव किरणों से अपना मुख धो लो और सुखी जीवन का आनंद लो।[53]

निरालाजी ने "तुलसीदास" में सुखी समाज के लिए नवीन संदेश दिया है। निरालाजी लिखते हैं कि, भारत के निवासियों अब जागो, अपने पूर्व दिशा

में ज्ञान का निर्झर -- अपनी ज्ञान रूपी ज्योति से अंधकारमयी रात्री को नष्ट कर तुम्हारे लिए नवीन ज्ञान का भंडार लेकर आया है। अगर तुम अपने जीवन में इस ज्योति का प्रकाश चाहते हो तो इस प्रकाश का तुम अपने पास संग्रह कर लो और भारत का अंधकार पुनः पनपने न पाये जिससे हमारे देश की ज्योति बूझ न जाये।[54]

आगे निरालाजी सुखी समाज के लिए महत्वपूर्ण कामना करते हैं। निरालाजी कवि के माध्यम से भगवान से सुखी समाज के लिए वरदान माँग रहे हैं। कवि कहते हैं कि मेरा सारा अभिमान दूर हो जाये और समाज के सारे बंधनों से मैं दूर हो जाऊँ और भय मेरे मन में नष्ट हो जाय। समाज के बंधनों से वर्णाश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम से समाज को दूर कर उन्हें सुखी करने का प्रयास कर सकूँ तथा मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप इस प्रकार की प्रबल महानता मेरे विचारों में और जीवन में भर दो।[55] कवि यहाँ अपने जीवन को मिट्टी में मिलाने के लिए भी प्रार्थना करता है, जिससे की दुःखी समाज को सुख का अनुभव दे सकें।

निरालाजी कहते हैं कि मेरा अंत अभी न होगा क्योंकि मैं समाज में होनेवाले दुःख को खींचकर उन्हें सुख के वातावरण का अनुभव दूँगा। निरालाजी अपने जीवन की सार्थकता मृत्यू में नहीं मानते। आप कहते हैं कि, मैं प्रत्येक फूल में, जो निद्रा के कारण आलस्य से भरा है; उन्हें मैं दूर कर प्रसन्नतापूर्वक अपने जीवन के नव अमृत से उसे सींचा दूँगा। साथ ही उन दुःखी लोगों को उनके सुख का मार्ग दिखलाऊँगा जो सीधा ईश्वर से मिलता है। यह मार्ग दिखलाकर भी मेरा अंत नहीं होगा।[56] इसी प्रकार निरालाजी ने अपनी कविताओं में भारत के सुखी समाज के चित्रण का वर्णन किया है। जिससे निरालाजी सामान्य के कवि माने जाते हैं।

निरालाजी की राष्ट्रीयता की विशेषता यह हैं कि वह भावावेश का परिणाम नहीं है। निरालाजी के राष्ट्रीयता के पीछे ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक चेतना का बल है। निरालाजी की राष्ट्रीयता चेतना की व्याख्या करते हुए धनंजय वर्माजी कहते

हैं, "निरालाजी राष्ट्रीयता कभी भी देश-काल की सीमा में आबध्द नहीं रही। आपके गीत ऐसी भावना को व्यक्त करते हैं जो किसी भी काल में, किसी भी देश में, किसी भी कवि की होना चाहिए यदि वह शुध्द राष्ट्रीयता का कवि है।··· भारतीय स्वतंत्रता के प्रति जितना आवेग आपके काव्य में मिलता हैं उतना समय के स्वर में और कहीं नहीं मिलता।···· समस्त जीर्ण-शीर्ण प्राचीन को जलाकर नवीनता का प्रकाश फैलाने की प्रार्थना आपकी राष्ट्रीय भावना की ही अभिव्यक्ति हैं।[57]

निरालाजी की राष्ट्रीयता एक अविकसित राष्ट्र और उसके दलित, दुःखी और पीडित निवासियों के प्रति सहानुभूति तथा उनके जीवन के नव-निर्माण से संबंध हैं। निरालाजी की कविता में राष्ट्रीयता के विविध स्वर मुखरित हुए हैं। इसी कारण से आपकी राष्ट्रीयता न तो सामायिक कही जा सकती हैं न संकीर्ण।

संदर्भ :-

1· डॉ·रामविलास शर्मा - निराला की साहित्य साधना - खंड 2 - पृ·149

2· निराला - अपरा - भारती वन्दना - पृ· 9

3· वही - पृ· 9

4· वही - पृ· 9

5· वही - मातृ वंदना, पृ·29

6· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 83

7· डॉ·सुधाकर शंकर कलवडे - आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना पृ· 133

8· निराला - अपरा - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 91

9· वही - जागो फिर एक बार -2पृ· 16

10· वही - खण्डहर के प्रति - पृ· 132

11· वही - सहस्त्राब्दि - पृ· 176

12· वही - जागो फिर एक बार -1, पृ·13

13· वही - पृ· 15

14· वही - जागो फिर एक बार - 2, पृ· 17

15· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 79

16· वही - पृ· 81

17· वही - पृ· 84

18· वही - पृ· 90

19· वही -दीन , पृ·114

20· वही - भगवान बुध्द के प्रति - पृ· 159

21· वही - सहस्त्राब्दि - पृ· 178

22· वही - बादल राग - पृ· 11

23· वही - भिक्षुक - पृ· 66

24· वही - सरोज स्मृति - पृ· 146

25· वही - देवी सरस्वती - पृ· 166

26· वही - जागो, जीवन धनिके - पृ· 35

27· वही - यामिनी जागी - पृ· 21

28· वही - जुही की कली - पृ· 13

29· वही - शेष - पृ· 24

30· वही - विफल वासना - पृ· 120

31· वही - विधवा - पृ· 55

32· वही - पृ· 56

33· वही - सरोज स्मृती - पृ· 153

34· वही - बादल राग - पृ· 11

35· वही - भिक्षुक - पृ· 66

36· वही - तोडती पत्थर - पृ· 27

37· वही - विधवा - पृ· 56

38· वही - दीन - पृ· 114

39· वही - पृ· 114

40· वही - दान - पृ· 130

41· वही - धारा - पृ· 116

42· वही - बादल राग - पृ· 11

43· वही - जागो फिर एक बार -2· पृ· 17

44· वही - आवाहन - पृ· 118

45· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 91

46· वही - स्वागत - पृ· 36

47· वही - नाचे उस पर श्यामा - पृ· 135

48· वही - जागो जीवन धनिक - पृ· 34-35

49· वही - जागा दिशा - ज्ञान - पृ· 29

50· वही - जागो फिर एक बार -1 - पृ· 15

51· वही - जागो जीवन धनिके - पृ· 35

52· वही - प्रात तव द्वार पर - पृ· 31

53· वही - प्रभाती - पृ· 25

54· वही - तुलसीदास - पृ· 172

55· वही - धूलि में तुम मुझे भर दो - पृ· 162

56· वही - ध्वनि - पृ· 11 1

57· धनञ्जय वर्मा - निराला काव्य पुनर्मुल्यांकन - पृ· 133